तुम लौट आओगे मृत्युंजय राम नाईक

अनिल भारद्वाज

खास मुलाकात राज्यपाल राम नाईक से

राज्यपाल से बातचीत जारी थी। समय कितना बीत रहा है, इसका एहसास ही नहीं हो रहा था। मैंने कहा, राम नाईक को अटल बिहारी वाजपेयी के साथ काम करके कैसा अनुभव हुआ? नाईक बोले, अटल को हम शब्दों में बयान नहीं कर सकते। उनके साथ मेरे 1965 से संबंध हैं। अटल जी के तमाम कार्यक्रमों का संयोजन मैं ही करता था। वे भावुक व्यक्ति हैं। बात 1994 की है। पता चला कि मुझे कैंसर जैसी दुर्धर्ष बीमारी हो गई है। डाक्टरों ने सलाह दी कि मुझे टाटा हॉस्पिटल जाना पड़ेगा। उस वक्त अटल जी लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष थे और मैं मुख्य सचेतक। मैं लोकसभा की केटरिंग कमेटी का अध्यक्ष भी था। कैंसर का इलाज कराने अस्पताल जाना था इसलिए मैंने मुख्य सचेतक और केटरिंग कमेटी के अध्यक्ष का पद छोड़ने का निर्णय लिया। त्यागपत्र लिखा।

अटल जी भावुक हो गए। उनकी आंखें भर आईं। मुझे गले लगाते हुए बोले, पराक्रमी का पराभव नहीं होता मृत्युंजय राम नाईक। तुम वापस आओगे। उन्होंने मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं किया।

अटल जी के पास पहुंचा। मुझे गंभीर देखकर उन्होंने पूछा, क्या बात है? मैंने अपना त्यागपत्र उन्हें सौंप दिया और कहा कि क्या पता फिर लौटकर आऊंगा या नहीं। अटल जी भावुक हो गए। उनकी आंखें भर आईं। मुझे गले लगाते हुए बोले, पराक्रमी का पराभव नहीं होता मृत्युंजय राम नाईक। तुम वापस आओगे। उन्होंने मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं किया। एक साल इलाज के बाद मैंने कैंसर पर विजय पाई। उम्र के 60 वें पड़ाव में लिम्फोमा कैंसर मुझसे हार गया। सचमुच मैं काम पर वापस आ गया। तब अटल जी ने फिर कहा, मुझे ईष्या होती है कि राम नाईक को लोग कितना प्यार करते हैं। 1998 में अटल जी ने मुझे पांच विभागों रेलवे, नियोजन, कार्यक्रम क्रियान्वयन, गृह और पार्लियामेंट्री अफेयर का राज्यमंत्री बनाया। नीतीश कुमार रेलवे के कैबिनेट मंत्री थे। उसी दौरान पंजाब में ट्रेन का बड़ा हादसा हो गया। अटल जी ने मुझे बुलाया और रेलवे का काम पूरी तरह मेरे हवाले कर दिया।

माहौल अत्यधिक संवेदनशील और गंभीर हो गया तो मैंने विषयांतर कर दिया। पूछा, विपक्ष में बैठकर आपने सांसद निधि की शुरुआत करवा दी, अब इसको लेकर कई तरह के सवाल खड़े हो रहे हैं। नाईक के होठों पर हंसी तैर गई। बोले, आप जो कहना चाहते हैं, वो पूरी तरह सच नहीं है। सांसद निधि में पूरी तरह भ्रष्टाचार हो रहा है, ऐसा मैं नहीं मानता। मैं कह सकता हूं कि मोटे तौर पर इसका सदुपयोग हो रहा है। बतौर प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा था कि दिल्ली से एक रुपया चलता है लेकिन गांव तक सिर्फ दस पैसे पहुंचता है। अब मैं कहता हूं कि नब्बे पैसा गांव तक पहुंच रहा है। मेरी राय है कि सांसद निधि का इस्तेमाल केवल सरकार के माध्यम से ही होना चाहिए।

.....क्रमशः